मानसरोदक-खंड / पद्य सं. 7

सखी एक तेइ खेल न जाना । चित्त अचेत भई हार गवाँवा ॥
कवँल डार गहि भै बेकरारा । कासौं पुकारौं आपन हारा ॥
कत खेलै आइउँ एहि साथा । हार गँवाइ चलिउँ सैं हाथां ॥
घर पैठत पूँछब एहि हारू । कौनु उतर पाउब पैसारू ॥
नैन सीप आँसुन्ह तस भरे । जानहु मोंति गिरहिं सब ढरे ॥
सखिन कहा भोरी कोकिला । कौनु पानि जेहि पौनु न मिला ॥
हारु गँवाइ सो ऐसैहि रोवा । हेरि हेराइ लेहु जौं खोवा ॥

लागीं सब मिलि हेरै बूड़ि बूड़ि एक साथ ।
कोइ उठी मोती लेइ, घोंघा काहू हाथ ॥7॥

अर्थ :

उन सखियों में एक ऐसी थी जो खेल नहीं जानती थी. वह अपना हार खोकर होश खो बैठी और बेसुध हो गयी. कमल की डंडी हाथ में पकड़कर व्याकुल होकर कहने लगी – किससे अपना दुखड़ा कहूँ. क्यों मैं इनके साथ खेलने आई, जो अपने ही हाथों अपना हर खो बैठी. घर पहुँचते ही मुझसे इस हार के बारे में पूछा जायेगा. क्या उत्तर देकर मैं घर में प्रवेश कर पाउंगी. सीप जैसी उसकी आँखें आंसुओं से भरी हुई थीं और मोतियों रूपी आंसू ढुलक ढुलक कर गिर रहे थे. इसपर सखियों ने उससे कहा, अरे भोली कोकिला (कोयल), ऐसा कौन सा पानी है जिसमें हवा नहीं मिली (कहने का अर्थ यह कि ऐसा कौन सा सुखी जीवन है जिसमें दुःख नहीं है). खोया क=हार तुम भी ढूंढो, हम भी ढूंढते हैं.

इसके बाद सभी सखियाँ मिलकर पानी में डुबकी लगा लगाकर खोया हार ढूँढने लगीं. लेकिन किसी के हाथ हार नहीं लागा. कोई मोती लेकर बाहर निकला तो कोई केवल घोंघा ही निकाल पाया.

शब्दार्थ :

कँवल = कमल, गहि = पकड़कर (गहना = पकड़ना/ जैसे कबीर ने कहा है – 'मसि कागद छूयो नहीं, कलम गहि नहीं हाथ'), सैं = स्वयं, पैठत = प्रवेश पाकर (पैठना = पहुँचना, दाखिल होना/ पैठ होना = पहुँच होना), पैसारू = प्रवेश, पौनु = पवन, हेराई = खोया, बूड़ि = डूबकर, डुबकी लगाकर